ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3635

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

परंपरागत भारतीय चित्रकला में वर्णविधान

डॉ. सुषमा जैन
प्राचार्य
शुभांकन फाईन आर्टस् कॉलेज इन्दौर (म.प्र.)

भारतीय चित्रकला उस निःस्सीम पयोधि की भांति विस्तारित हैं जिसके ओर छोर तथा गहराई का सहज अनुमान नहीं लगाया जा सकता। आदिमकला सृजन एवं उसकी परम्परा का इतिहास मानव सभ्यता के पदचिन्हों द्वारा रचा गया है। चित्रकला वास्तव में रंगो का संसार है। प्रकृति में व्याप्त रंग जब अंतरंग बन जाते है तब बाहर और भीतर के रंगों से जो इंद्रधनुष बनता है वही से चित्रकला उपजती है रेखाओं से आकृतियों का निर्माण होता है लेकिन रंग हमें अधिक आकर्षित करते है। मनुष्य की चेतना में व्याप्त रंगों को रचने का नाम ही कला है[1]। रंग और रेखाओं के माध्यम से अपनी संवेदनाओं के प्रथम अभिव्यक्ति आदि मानव ने दी इस काल के चित्रों में लाल गेरूए रंग की प्रधानता रही तत्पश्चात् विभिन्नता के लिए काले सफेद तथा कहीं–कहीं पीले रंगों का भी उपयोग किया गया। इन चित्रों में सुगमता से प्राप्त होने वाले खनिज रंगों का उपयोग किया गया है इन रंगों में मुख्यरूप से गेरू, रामरज, हिरोजी तथा खड़िया के रंगों का प्रयोग है[2]। ये चित्र सीधे शिलाओं पर बने हैं उनके निर्माण से पूर्व किसी भी प्रकार के लेप का प्रयोग नहीं हुआ रंगों का प्रयोग पारदर्शी तथा अपारदर्शी दोनों रूपों में किया गया।

प्रचीन काल में रची गई जोगीमारा की गुहा भित्तियों पर सफेद, लाल तथा काले रंग का ही प्रयोग है चित्रों मे काला रंग हर्रा फल से सफेद रंग खड़िया व सफेद रंग की मिट्टी से एवं लाल रंग हिरोंजी से तैयार किये जाते थे। कहीं–कहीं पीले रंग का आभास होता है पर उसे उड़े हुए लाल रंग का अवशेष ही माना जाता हैं। प्रायः लाल रंग की रेखाओं से चित्र एक दूसरे से पृथक किए गए है। आकृतियों की आंख सफेद तथा बाल काले रंग से बनाए गए है[3]।

अजंता में सफेद मिट्टी, गेरूआ, एला मिट्टी का रंग, पत्थर का हरा रंग राजावर्त पत्थर का नीला रंग, काला और इनके कई एक तरह के मिश्रण प्राप्त होते है[4]। अजंता के चित्रों में लाल तथा पीले रंग का प्रयोग अधिक हैं। यहाँ गहरे चमकीले रंगों को प्रतीकात्मक विधि से लगाया गया है। प्रो. रामचन्द्र शुक्ल ने कला का रसास्वादन में अजन्ता की रंग योजना के बारे में लिखा है – इसके रंग ऐसे चमकते है जैसे अंधेरी रात में चांद तारे किसी सांवरी यौवना के शरीर पर रंग–बिरंगे हीरे जवाहरात। रंग प्रयोग में अजन्ता के कलाकारों ने कहीं भी उतावला पन नहीं दिखाया है संपूर्ण चित्रों में संजीदगी विद्यमान है[5]।

बाघ की गुफाओं का चित्रण विधान भी अजंता से मिलता है। गुफा की खुरदुरी भित्ति पर चूने का पलस्तर चढ़ा कर टेम्परा शैली में रंगाकन किया गया है। यहाँ सर्वप्रथम रेखांकन किया गया है फिर स्थानीय रंगों को तैयार कर समतल रूप से भर कर गोलाई एवं उभार देने के लिए आसपास गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है। काले, सफेद तथा हिरोंजी रंगों से उत्तम आलेखन बने हे तथा लाल, नीले और पीले विरोधी रंगों का भी प्रयोग हुआ है[6]।

बादामी गुफा का वर्ण विधान भी अजंता एवं बाघ गुफाओं के समान है किन्तु सिगरियां गुफा चित्रों की शैली अजंता के निकट होते हुए भी भिन्न है यहाँ गीली दीवार पर लाल अथवा काले रंग से रेखांकन करने के उपरांत रंग भरे गए है[7]। इन गुफा चित्रों का वर्ण विधान उत्कृष्ट कोटि का है। इसमें पीला, हरा व भूरे रंगों का संयोजन किया गया है नीले रंग का प्रयोग नहीं किया गया है। तमिलनाडु में स्थित सित्तनवासल गुफा चित्रों में भी पीले हरे एवं भूरे रंगों की संगति का प्रयोग किया गया है रंगों का विधान सुकोमल, सरल एवं सुन्दर हैं। प्रकृति में हम जो कुछ भी देखते हैं उसका कोई न कोई रंग होता है रंगों को दो श्रेणियों में बाँटा जाता है शुद्ध एवं मिश्र। पीला, लाल एवं नीला ये तीनों शुद्ध रंग हैं। इन्ही शुद्ध रंगो के मिश्रण से हम अनेक मिश्रित रंग प्राप्त करते है।

प्रसिद्ध चित्रकार नन्दलाल बसु के अनुसार लगभग सभी प्रकार के भिन्ति चित्रों को बनाने के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता था। सफेद रंग के लिए खड़िया, पीले रंग के लिए पीली मिट्टी (चमकदार और फीकी दोनों) लाल रंग के लिए गेरू (चटक सुनहरी और कलछौं दोनों तरह की गेरूआ मिट्टी) हरे रंग के लिए टेरावर्ट नामक हरा पत्थर, नीली रंग के लिए राजावर्त (स्।चै स्।न्स्) नामक दुर्लभ कड़े पत्थर का चलन था। काला रंग कोयले एवं दिए की कालिख से निर्मित किया जाता था। कड़े पत्थरों को सिल लोड़े पर महीन पीस कर पावडर बना लेते थे एक सेर पावडर में पाँच सेर पानी मिला कर रख दिया जाता था। तत्पश्चात् ऊपर आए पानी को बड़ी सावधानी से निभार कर दूसरी बाल्टी में डाल देते थे। इसी प्रक्रिया को तीन बार दोहराया जाता था। शेष पानी सावधानी से थिराने पर नीचे रंग की एक परत रह जाती थी बच गए रंग को फिर से सिल लोढ़े पर पर पीस कर थिराने से गाढ़ा रंग तैयार हो जाता था। पुराने कपड़े की एक बत्ती बनाकर उसका एक मुंह रंग वाले बर्तन में तथा दूसरा मुंह बाल्टी में लटका देने पर जो थोड़ा बहुत पानी रंग में बचा होगा वह भी निकल जाएगा इस पद्धति को पड़ानों

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अर्थात थिराकर रंग बनाना कहा जाता था। खड़िया, एला मिट्टी, गेरू, हरा पत्थर अथवा कोई भी कड़ा पत्थर अथवा मिट्टी का रंग इसी विधि द्वारा तैयार किया जाता था। रंग तैयार हो जाने पर उपयुक्त मात्रा में गोंद मिलाया जाता था[8]। प्राचीन काल में रंगों को स्थायी बनाने के लिए लासा या मीडियम की तरह उपयोग करने के लिए गोंद के अतिरिक्त अंडे की जर्दी का भी उपयोग किया जाता था। नीले रंग को बनाने के लिए विशेष सावधानी रखी जाती थी नीले रंग को भेड़ या बकरी की चमड़ी के सेरस में मिश्रित किया जाता था क्योंकि अण्डे की जर्दी के पीलेपन से नीला रंग हरा हो जाता है जबकि सरेस तथा गोंद रंगों की रंगत एवं चमक को प्रभावित नहीं करते है[9]।

भारतीय परंपरागत भित्तिचित्रों का क्रम आदिमकला से ही प्रारंभ होता है जो कालांतर मे लोक कला की सहज अभिव्यक्ति का रूप ले लेती है। लोककला पीढ़ी हस्तान्तरित होते हुए प्राचीन संस्कृति एवं परम्पराओं को समेटे हर घर आंगन में मुखारित होती है।

भारतवर्ष में लोककला के जीवन्त उदाहरण उत्सव, त्यौहार एवं धार्मिक अनुष्ठानों पर भूमि एवं भित्ति अलंकरण के रूप में स्त्रियों द्वारा सुन्दर कलाकृतियों निर्मित की जाती हैं। लोक कलाओं की रचना में धातु, चावल, जौ, खनिज रंग गेरू, हिड़मिच, रामरज, खड़िया, व विभिन्न रंगों फूल पत्ती, शंख, सीप, बालू, बुरादा इत्यादि का प्रयोग किया जाता है[10]। महाराष्ट्र में रांगोली, गुजरात में साथिया राजस्थान में मॉडणा उत्तर प्रदेश में चौक पूरना अल्मोड़ा एवं गढ़वाल में आपना, बिहार में अहपन तथा बंगाल में अल्पना कहा जाता है। महाराष्ट्र में श्वेत चमकदार पत्थर का अग्नि में तपाकर पीसा जाता है तत्पश्चात उसमें अन्य कृत्रिम रंग मिला कर रांगोली के रंग तैयार किए जाते है। अल्पना के लिए बंगाल में घरों पर ही रंग तैयार किए जाते है। सेलखरी को पीस कर श्वेत रंग के चूर्ण से दीवारों, दरवाजों एवं भूमि पर चित्रकारी की जाती है। बिहार के अहपन तथा अल्मोड़ा गढ़वाल के आपना लोक चित्रण में भी लगभग अल्पना के ही रंग विधान को अपनाया जाता है। कभी–कभी ताजे फूलों तथा पत्तियों के निचोड़ से गीले रंग भी तैयार किए जाते है[11]।

घर के दरवाजों पर परम्परानुसार मंगल चित्र बनाए जाते है इनका निर्माण जलरंगों द्वारा किया जाता है इनके बनाने वाले परिवार आज भी सक्रिय है। भित्ति चित्रों की परम्परा आज भी मंदिरों में प्राप्त होती है लगभग सभी जैन मंदिरों में जैन कथाओं पर आधारित चित्रों का निर्माण भित्तियों पर किया जाता है। लोक कलाएँ भारतीय परम्परा का अविभाज्य अंग है। चाहे बिहार की मधुबनी कला है महाराष्ट्र की वरली, मध्यप्रदेश की भील पिथौरा, सहरिया जनजाति की चित्रकला हो उड़ीसा के ग्रामीण मकान की दीवारों पर बनी झोटी चित्रकला हो अथवा बंगाल के कालीघाट चित्रों की परम्परा हो इन सभी में रंग संयोजन की काल्पनिक किन्तु सुन्दर अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है। लोक कलाएँ जीवन से निकली जीवन से जुड़ी और जीवन पर्यन्त चलने वाली ऐसी धरोहर हैं जो सांस्कृतिक परिवर्तन के बाद भी पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली आपरिवर्तनशील आस्था है।

प्राचीनकाल में रचे गए भित्तिचित्रों में शुद्ध एवं प्रभावशाली रंगों का प्रयोग किया गया। रंगों के निर्माण एवं उपयोग की तकनीक इतनी विकसित एवं उन्नत थी कि हजारों वर्षों के उपरांत आज भी लोक कलाओं के अंकन में चित्रों में लगे रंग सुरक्षित है। लोक कलाओं के अंकन में चटख रंगों के प्रयोग की परंपरा भारतीय जन मानस के उल्लास एवं रंगो के प्रति तीव्र आकर्षण को व्यक्त करती है। वर्तमान में अमूर्त कला रंगों एवं रूपाकारो की अभिव्यक्ति है जिसमें शुद्ध, चटख रंगों की अपनी ही भाषा है सचमुच रूप ही कला की आत्मा एवं रंग ही कला के प्राण है।

संदर्भ

1. *कला समय – पत्रिका – कला का ललित संसार ए. कमर – पृ. स. 19*
2. *भारतीय चित्रकला का इतिहास – बडेरिया तारक नाथ – पृ. सं. 31*
3. *भारतीय चित्रकला का इतिहास – अविनाश बहादुर वर्मा – पृ. सं. 31*
4. *दृष्टि और – सृष्टि – नन्दलाल बसु – पृ. सं. 116*
5. *भारतीय चित्रांकन – रामकुमार विश्वकर्मा – पृ. सं. 57*
6. *डॉ. रीता प्रताप – भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास– पृ. सं. 93*
7. *कला और कलम – गिर्राज किशोर अग्रवाल – पृ. सं. 87*
8. *दृष्टि और सृष्टि – नन्दलाल बसु – पृ. सं. 59 – 61*
9. *कला एवं तकनीक – डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा – पृ. सं. 95*
10. *कला त्रैमासिक – पत्रिका – लेख– उत्तरप्रदेश की लोक कलाओं में भित्ति व भूमि चित्रण – प्रभा पंवार – पृ. सं. 4*
11. *ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त – मिनाक्षी कासलीवाल भारती – पृ. सं. 31*